Nai Dunia (Indore), 19th January 2023, Page – 09

आइआइएम, आइआइटी मिलकर कम उत्सर्जित कर रहे एक हजार टन कार्बन

गजेन्द्र विश्वकर्मा ● इंदौर

- दोनों संस्थान अपने परिसर के अधिकांश बिजली के उपकरण सोलर ऊर्जा से चलते हैं
- पर्यावरण की बेहतरी के लिए दोनों बड़े संस्थानों ने अपनाई सौर ऊर्जा, ताकि दूसरे संस्थान भी इनसे प्रेरणा ले सकें

देश के दो बड़े शिक्षण संस्थान भारतीय प्रबंध संस्थान (आइआइएम) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) के इंदौर कैंपस में कुछ कमाल की कहानी लिखी जा रही है। यह कहानी कार्बन उत्सर्जन मे ऐतिहासिक कमी लाने की सफलता से संबंधित है। आइआइएम न सिर्फ विद्यार्थियों को प्रबंधन की शिक्षा दे रहा है बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी नवाचार कर रहा है। आइआइएम इंदौर अपने नवाचारों के चलते अब प्रतिवर्ष 507 टन कार्बन डाई आक्साइड कम उत्सर्जित कर रहा है। इसी तरह आइआइटी इंदौर हर वर्ष 500 टन कार्बन उत्सर्जन को कम करने में योगदान दे रहा है। यह हो पा रहा है इन दोनों परिसर में सोलर प्लांट लगाने से। आइआइएम को इससे हर महीने चार लाख रुपये की बिजली की बचत हो रही है। संस्थान के 193 एकड़ परिसर में स्थित इमारतों पर सोलर पैनल लगाए गए हैं। 460 किलोवाट के प्लांट से बिजली की पूर्ति की जा रही है। इधर, आइआइटी में 422 किलोवाट का प्लांट लगाया गया है। इससे हर महीने लाखों रुपये की बचत हो रही है। संस्थान ने एक कदम आगे बढ़ते हुए सोलर ऊर्जा का उपयोग अन्य माध्यमों में भी कर दिखाया है। सोलर ऊर्जा से शर्करा तैयार की जा रही है।

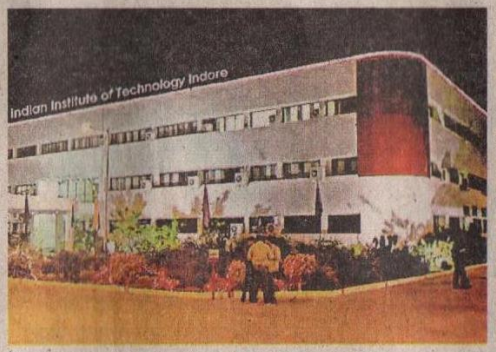

आइआइटी परिसर का एक बड़ा हिस्सा सौर ऊर्जा से चमकता है। ● फाइल फोटो

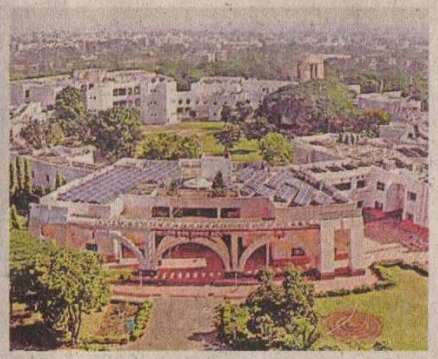
आइआइएम में मुख्य कैंपस की छत पर लगी हैं सोलर पैनल।

बाहर की बिजली लेने की जरूरत नहीं होगी

आइआइएम इंदौर के निदेशक प्रो. हिमांशु राय का कहना है कि प्राकृतिक ऊर्जा का उपयोग हम विभिन्न माध्यमों से कर सकते हैं। चूंकि आइआइएम का उद्देश्य केवल शिक्षा प्रदान करना ही नहीं, बल्कि समाज के लिए ऐसे कार्य भी करना है जिससे कि भविष्य बेहतर बना रहे। संस्थान अपने परिसर को आदर्श बनाने के लिए कार्य कर रहा है। परिसर को पूरी तरह इकोफ्रेंडली किया जा रहा है। इसके लिए प्राकृतिक खेती और ऊर्जा की बचत की जा रही है। संस्थान ने सोलर ऊर्जा का बेहतर प्रबंधन कर लिया है। कुछ सालों में यह स्थिति भी आएगी जब हम बाहर की बिजली पर निर्भर नहीं रहेंगे। इस समय मैस, होस्टल, कक्षाएं, लाइब्रेरी, लैब व कई साधनों को सौर बिजली से चमका रहे हैं।

सोलर ऊर्जा पर कई तरह के प्रयोग कर रहा आइआइटी

आइआइटी इंदौर के सूचना अधिकारी सुनील कुमार कहते हैं- संस्थान प्राकृतिक ऊर्जा का विभिन्न तरह से उपयोग कर रहा है। सोलर ऊर्जा का उपयोग करने के साथ ही इससे और क्या-क्या किया जा सकता है, इस पर लगातार शोध हो रहे हैं। सोलर ऊर्जा तैयार करना और इसे किसी जगह पर एकत्रित करना भी एक चुनौती है। इसके लिए भी संस्थान कार्य कर रहा है, ताकि रात में जब सोलर ऊर्जा नहीं मिलती तब इसका उपयोग हो सके। हम 50 से ज्यादा इलेक्ट्रिक वाहन भी चला रहे हैं।

इसलिए अत्यंत जरूरी है सोलर ऊर्जा का उपयोग करना

ईकेआइ एनर्जी के निदेशक मनीष डबकरा का कहना है कि एक यूनिट बिजली जलाने से एक किलो कार्बन उत्सर्जन होता है। शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने के मकसद से कई देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन और इससे होने वाली तबाही से निपटने के लिए यह जरूरी है। नैट-शून्य का लक्ष्य हासिल करने के लिए तकनीकें मौजूद हैं और सभी की पहुंच में हैं। इसके लिए सबसे अहम है कि प्रदूषण फैलाने वाले कोयले, गैस व तेल से बचा जाए।

इंदौर में अन्य स्थानों पर भी चमक रहा सूरज

इंदौर के बीचोंबीच स्थित एसजीएसआइटीएस संस्थान को भी बड़े शिक्षण संस्थानों से सीखने को मिल रहा है। संस्थान में हाल ही में 50 लाख रुपये की लागत से सोलर प्लांट लगाया है। इससे संस्थान को हर महीने 90 हजार से एक लाख रुपये की बचत होगी। खजराना गणेश मंदिर में भी 14 हजार यूनिट हर महीने तैयार की जा रही है। इससे करीब 90 हजार रुपये की बिजली की बचत हो रही है।